कृषि आधारित उद्यमशीलता द्वारा स्वावलम्बन

सीमा यादव, एस.के. सिंह**, राघवेंद्र सिंह**, एस.के. दुबे***, निमिषा अवस्थी****, विस्टर जोशी***** और स्वाती दीपक दुबे********

"कृषि क्षेत्र का वर्ष 2022-23 में राष्ट्रीय आय में सकल योगदान 18 प्रतिशत है। यह क्षेत्र समाज के संख्यात्मक रूप से बड़े और कमजोर वर्ग को प्रत्यक्ष रोजगार एवं आय प्रदान करता है। कृषि क्षेत्र में उत्पादन और लाभप्रदता में सुधार के लिए कृषि उद्यमिता न केवल एक अवसर है, बल्कि एक आवश्यकता भी है। कृषि आधारित उद्यमिता भारत में टिकाऊ आर्थिक विकास हासिल करने में भी मदद करती है। प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, पर्यावरण-अनुकूल कृषि आदि टिकाऊ कृषि में कृषि उद्यमिता हमारी अर्थव्यवस्था के प्रमुख चालक हैं और ग्रामीण भारत का परिवेश बदलने की क्षमता रखते हैं। अत: विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने, गरीबी को दूर करने, लोगों के जीवन स्तर को उठाने और कृषि एवं पशुपालन को अत्यधिक लाभकारी बनाने के लिए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में उद्यमिता एक अच्छा उपाय सिद्ध हो सकती है।"

कृषि आधारित उद्यमशीलता द्वारा भारतीय कृषक को उत्पादक से उद्यमी बनने का अवसर तो प्राप्त होता ही है। इसके साथ ही साथ कृषक अपने आप को स्वावलंबी बनाने में समर्थ होते हैं। कोई भी व्यक्ति, जिसके अन्दर जोखिम को भांपने और उठाने की क्षमता हो, उद्यमी बन सकता है। वर्तमान समय में आत्मनिर्भर बनने के लिए, कृषि और उससे जुड़े हुए क्षेत्रों में उद्यम की संभावनाओं को पहचानना अति आवश्यक है। कृषि आधारित उद्यमिता देश के आर्थिक और सामाजिक विकास से निकटता से जुड़ी हुई है। इसे विकासशील देशों में विकास के संकेतकों में से एक माना जाता है। कृषि क्षेत्र में उद्यमिता को बढ़ावा देना, कृषि व्यवसाय को अग्रसर करने के लिए सबसे उपयुक्त विकल्पों में से एक है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसमें 60 प्रतिशत से ज्यादा भागीदारी ग्रामीण जन समुदाय की है, जो जीवनयापन (आजीविका) के लिए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर हैं। हरित क्रांति के बाद यद्यपि फसल उत्पादन में तीन गुना वृद्धि हुई है। देश खाद्यान्न उत्पादन में अब आत्मनिर्भर हो चुका है, किन्तु कृषि के माध्यम से गरीबी और बेरोजगारी का पूर्णत: समाधान नहीं किया जा सकता है। अतएव कृषि आधारित उद्यम को अपनाकर रोजगारपरक बनाने की आवश्यकता है। कृषि आधारित उद्यमशीलता द्वारा न केवल स्वावलम्बन प्राप्त होगा, अपितु कृषकों व ग्रामीण युवकों का कृषि व संबंधित विधाओं में जुड़ाव बरकरार रहेगा। इसके अलावा स्कूल ड्रॉप आउट नवयुवकों को भी स्वरोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

खाद्य एवं कृषि संगठन (वर्ष 2014) के आंकड़े के अनुसार वर्ष 2050 में जनसंख्या 9 बिलियन के पार होगी। इसमें से 1.3 बिलियन नवयुवक (15 वर्ष से 24 वर्ष) होंगे और आधे से ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करेंगे। बढ़ती हुई जनसंख्या एवं घटती हुई कृषि योग्य भूमि आने वाले समय में एक बड़ी ही गंभीर

महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलम्बन

उद्यमी बनने के लिए कौशल विकास और सतत प्रयास महत्वपूर्ण पहलू हैं। अधिक से अधिक महिलाओं को रोजगार देना 7 महिलाओं द्वारा देखा गया सपना था। होली के त्यौहार में पोषक तत्वों के साथ टमाटर, चुकंदर जैसे विभिन्न स्वादों में आलू पापड़, चिप्स के मूल्य संवर्धन के कौशल प्रशिक्षण से आदर्श स्वयं सहायता समूह को भी लाभ हुआ है। यह समूह रुपये 24000-26000 प्रतिमाह कमा रहा है। यह समूह अब आसपास के गांवों में एक आदर्श समूह के रूप में प्रचलित है।

*वैज्ञानिक; **प्रधान वैज्ञानिक; ***निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, जोन तृतीय, कानपुर (उत्तर प्रदेश); ****एस.एम.एस., कृषि विज्ञान केन्द्र, केवीके कानपुर देहात; *****जालौन एवं ******प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)

कृषि उद्यम की जानकारी लेता किसान

चुनौती होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों और बेरोजगार नवयुवकों की बढ़ती संख्या, रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रही है। देश आर्थिक विकास के साथ-साथ रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा नहीं कर पा रहा है। अतएव कृषि आधारित उद्यमशीलता के नए आयामों को खोजने एवं अपनाने की आवश्यकता है।

कृषि क्षेत्र में उद्यमिता की अवधारणा

अच्छी व टिकाऊ आमदनी प्राप्त करने के लिए एक नया उद्यम शुरू करने, व्यवस्थित करने और प्रबंधित करने की क्षमता को उद्यमिता के रूप में जाना जाता है। कृषि आधारित उद्यमिता, कृषि पर आधारित विभिन्न उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से संबंधित है। एक उद्यमी, जिसकी कंपनी कृषि या कृषि व्यवसाय में लगी हुई है, उसे कृषि उद्यमी के रूप में जाना जाता है। एक अच्छे कृषि उद्यमी को निरंतरता बनाए रखने, रचनात्मक ढंग से सोचने, दक्षतापूर्वक काम करने, परिकलित जोखिम लेने, प्रभावी ढंग से संवाद करने और बाजार के अवसरों की पहचान करने में सक्षम होना बहुत आवश्यक है। कृषि उद्योग द्वारा पेश की गई विशाल संभावनाओं ने कृषि उद्यमिता को और अधिक लोकप्रिय बना दिया है। प्रगतिशील किसानों, बेरोजगार कृषि स्नातकों, अपने गृह नगरों में रहने वाले सेवानिवृत्त लोगों, सहकारी समितियों और स्वयं सहायता संगठनों सहित प्रत्येक व्यक्ति कृषि उद्यमी हो सकता है। कृषि उद्यमिता के लिए कृषि को एक विपणन योग्य और आकर्षक व्यवसाय में बदलना आवश्यक है। कृषि उद्योग की उद्यमशील क्षमता को अधिकतम करने के लिए पानी, बीज, मृदा और बाजार की मांगों सहित कृषि तत्वों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना आवश्यक होता है। नवयुवकों को कृषि उद्यमिता के लिए आकर्षित करने और रोजगार पैदा करने के लिए खेतों और पशुधन पर आधारित इकाइयों को एकीकृत करना अति आवश्यक है।

नवयुवक उद्यमी

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों पर आधारित उद्यमिता

ग्रामीण व कृषि विकास, कृषि उद्यमशीलता से जुड़ा हुआ है, इसलिए ग्रामीण उद्यमों को बढ़ावा देने की अत्यंत आवश्यकता है। रोजगार की पेशकश के संभावित लाभ के अलावा, ग्रामीण उद्यमिता को व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण को बनाए रखने

प्रसंस्करण द्वारा महिलाओं में स्वावलम्बन

कृषि उद्यमिता विकास में चुनौतियां

- ग्रामीण भारत में, बुनियादी ढांचागत सुविधाएं मानक के अनुरूप नहीं हैं। इनमें परिवहन, संचार, बिजली और विपणन नेटवर्क जैसी सुविधाओं के क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है।
- देश में कई क्षेत्रों में बेहद खराब उद्यमशीलता की पहचान की गई है। शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण ग्रामीण लोगों में उद्यमशीलता के विकास में कमी है। ग्रामीणों की उद्यमशीलता के लिए कम रुझान का यह एक मुख्य कारण है।
- नौकरी की तलाश में कुशल और प्रतिभाशाली कार्यबल का ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में पलायन होने से, उद्यमशीलता में भारी कमी आती है।
- खराब प्रौद्योगिकियां और उपकरण के कारण उद्यम शुरू करने के बाद विफलता प्राप्त होती है। इसी कारण उद्यमिता को बाकी लोग अपनाने से डरते हैं।
- कृषि उपकरण और कृषि उद्यम पर सूचना प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान की कमी से कृषि उद्यमिता के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- लोगों में उद्यमिता के प्रति अशिक्षा और अज्ञानता।
- ग्रामीण लोगों को सरकार की नीतियों की जानकारी और उनका लाभ नहीं मिल पाता।
- कृषि क्षेत्र में सरकार की ओर से दी जाने वाली सहायता, निगमित और सेवा क्षेत्रों के विकास को दी जाने वाली सहायता से बहुत कम है।
- उत्पादन का तब तक कोई मूल्य नहीं है, जब तक इसे बेचा और उपभोग न किया जाए। इतनी सारी समस्याओं के कारण किसान के लिए कृषि उत्पादों का विपणन कठिन हो गया है।
- किसानों को अपनी उपज को नजदीकी बाजारों तक ले जाने में बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गोदाम सुविधाओं के अभाव के कारण वे अपने उत्पाद का भंडारण करने में हमेशा असमर्थ रहते हैं। उत्पाद को बाजार में ले जाना एक उच्च लागत कारक बनता जा रहा है, न केवल कृषि उत्पादन के परिवहन के संदर्भ में, बल्कि बीज, उर्वरक और कीटनाशक जैसे कृषि आदान प्राप्त करने के लिए भी।

मशरूम उत्पादन आधारित उद्यम

के एक प्रणाली के रूप में देखा जाता है। स्वरोजगार एवं स्वावलम्बन के लिए किसानों को उद्यमियों के रूप में सोचना, सीखना और कार्य करना होगा। इससे समग्र विकास की अवधारणा स्थापित हो पाएगी। सीमांत व मझोले किसानों के अस्तित्व एवं विकास के लिए कृषि उद्यमिता एक महत्वपूर्ण व लाभदायक रोजगार का आधार है।

उद्यमशीलता के अवसर

कृषि से संबंधित ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं, जिनमें उद्यम को अपनाकर बहुत से किसानों, ग्रामीणों, महिलाओं एवं नवयुवकों को आत्मनिर्भर बनने में मदद की जा सकती है।

मशरूम उत्पादन

श्री ओमप्रकाश यादव, ग्राम पकरा, जिला कानपुर देहात के रहने वाले सीमांत किसान हैं। इन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर से मशरूम उत्पादन में वर्ष 2021 में प्रशिक्षण लेकर इसको उद्योग के रूप में अपनाया। इन्होंने 1.9 लाख की कुल लागत से अपना उद्योग आरंभ किया। इसमें 2.1 लाख रुपये शुद्ध लाभ प्रथम वर्ष में हुआ। एक छोटे से क्षेत्र में इन्होंने 16.85 क्विंटल मशरूम का उत्पादन किया और अपने आप को स्वावलंबी बनाया। श्री ओमप्रकाश की सफलता की कहानी छोटे किसान भाइयों के लिए एक प्रेरणादायक है।

मधुमक्खी पालन द्वारा स्वरोजगार का सृजन

मधुमक्खी पालन

श्री सुरेन्द्र कुमार, ग्राम बिरमा के बेरोजगार नवयुवक थे। स्कूल छोड़ने के बाद इनके पास नौकरी का कोई अवसर नहीं था। कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर के वर्ष 2021 में संपर्क में आने के बाद इन्होंने मधुमक्खी पालन में प्रशिक्षण लिया और इसको अपना व्यवसाय बनाया। वर्तमान में इनके पास कुल 456 बक्से हैं। इनसे 15-17 क्विंटल शहद का उत्पादन होता है और 2-2.5 लाख रुपये प्रतिवर्ष मुनाफा होता है। अपने इस उद्यम के साथ श्री सुरेन्द्र कुमार ने न केवल अपने आप को स्वावलंबी बनाया है, बल्कि दूसरे लोगों को भी रोजगार प्रदान कर रहे हैं।

शूकर पालन से स्वावलम्बन

श्री राम पाल, ग्राम-सतुईया खुर्द, नवाबगंज, बरेली में वाल्मिकी समुदाय के एक प्रगतिशील 37 वर्षीय उद्यमी हैं। वर्ष 2004 में 10वीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और अपने परिवार के पारंपरिक शूकर पालन व्यवसाय को अपना लिया। प्रतिवर्ष केवल 40000-42000 रुपये मुनाफा होने के कारण ये संतुष्ट नहीं थे। इसलिए, इन्होंने वैज्ञानिक शूकर पालन विधियों को शामिल करते हुए व्यवसाय को फिर से शुरू करना चाहा। वर्ष 2022 में, वे किसान मेले के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली के विशेषज्ञों से जुड़े और वैज्ञानिक शूकर पालन को अपनाने की इच्छा व्यक्त की। कृषि विज्ञान केंद्र, बरेली के कौशल आधारित प्रशिक्षण द्वारा सशक्त होकर, उन्होंने अपने स्थानीय नस्ल के शूकरों को बेच दिया और शूकर प्रजनन सह चर्बी वाले फार्म के लिए एक बीघा जमीन में निवेश किया। वर्ष 2023 में, श्री राम पाल के फार्म ने 45 उच्च गुणवत्ता वाले बड़े सफेद यॉर्कशायर शूकरों का उत्पादन किया। इनका वजन 44.5 क्विंटल था। इसके साथ ही सकल आय और शुद्ध आय रुपये क्रमशः 7,56,000 रुपये और 3,37,000 रुपये प्राप्त हुई।

फूलों की खेती द्वारा स्वरोजगार

खाद्य संरक्षण, प्रसंस्करण और पैकेजिंग

अनेक कारणों जैसे-खाद्य भंडारण, परिवहन और प्रसंस्करण सुविधाओं की कमी के कारण कृषि उपज का बड़ा हिस्सा बर्बाद हो जाता है। वर्तमान समय में खाद्य उपभोक्ता की प्राथमिकता में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। इसके कारण प्रसंस्करित खाद्य उत्पादों की मांग बाजार में बढ़ गई है। प्रसंस्करित खाद्य, उद्यमियों के लिए बड़ी संभावनाएं खोलता है, चाहे वह फास्ट फूड हो, पैकेज्ड फूड हो या ऑर्गेनिक फूड हो। उचित प्रबंधन और विपणन पहल के साथ कृषि उद्यमी कृषि उत्पादों के मूल्य को बढ़ा सकते हैं और स्वरोजगार के नए अवसर को बना सकते हैं।

फूलों की खेती

फूलों की खेती बहुत लाभकारी उद्यम व आकर्षक क्षेत्र है। इसमें स्वरोजगार एवं उद्यमिता के बड़े अवसर हैं। इसकी खेती

में विश्व व्यापार में हिस्सेदारी मात्र 0.18 प्रतिशत है। फूलों की बढ़ती मांग एवं गुणवत्तायुक्त फूलों के बहुत बड़े बाजार के कारण यह व्यवसाय अपने आप में ही एक रोजगार का अवसर है।

पुष्प उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन

श्रीमती कौशल्या देवी, जिला प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) के अलापुर गांव में रहती हैं। वह फूल उत्पादन और फूल मूल्यवर्धित उत्पादों जैसे फूल, माला, गुलदस्ता, कार की सजावट और घर की सजावट जैसे उद्योग में शामिल थीं। परंतु पारंपरिक विधि से फूलों की खेती में ज्यादा उत्पादन नहीं होता था। श्रीमती कौशल्या देवी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़ से प्रशिक्षण लेने के बाद इसको बड़े स्तर पर अपना व्यवसाय बनाया। गुलाब और गेंदे की खेती सबसे अधिक बार होने वाली गतिविधियां थीं। प्रत्येक का योगदान 70-80 प्रतिशत था और उसके बाद ग्लैडियोलस और गुलदाउदी (30 प्रतिशत) का स्थान था। खेती की कुल लागत 72000 रुपये थी। समारोह में फूलों की सजावट के साथ फूल और उसके मूल्यवर्धित उत्पादों की बिक्री से प्रति माह 20000-22000 रुपये तक प्राप्त होते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन से स्वावलम्बन

लाभकारी उत्पाद (बीज, पौधे व अन्य)

किसान महत्वपूर्ण उत्पादों के उत्पादन में उद्यमशील गतिविधियां शुरू कर सकते हैं जैसे कि उत्तम गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन वाले बीज पैदा करना, उत्तम पौध, नर्सरी, जैविक खाद, वर्मीकम्पोस्ट, कीटनाशक इत्यादि। पशुपालन क्षेत्र में कृत्रिम गर्भाधान, पशुओं का चारा, दवाई, मछली के बीज, हैचरी, मुर्गियों का दाना, मछली का दाना इत्यादि।

वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन से उद्यमिता

श्री अशोक कुमार सिंह पारंपरिक विधि से कृषि करके ज्यादा मुनाफा नहीं कमा पा रहे थे। इसके बाद कृषि विज्ञान केन्द्र, जालौन से वर्ष 2022 में प्रशिक्षण लेने के उपरांत उन्होंने कृषि के साथ-साथ वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन शुरू किया। श्री अशोक कुमार सिंह ने वर्मीकम्पोस्ट के अंतर्गत 3 बड़े वर्मीबेड बनाये हैं। इनका माप क्रमशः 50×12, 35×12 एवं 50×50 फीट है। इसका लाभ यह हुआ है कि खाद उत्पादन 50-60 टन एक बार में होता है। प्रतिवर्ष लगभग 120-150 टन तक खाद उत्पादित होती है। बड़े पैमाने पर वर्मीकाम्पोस्ट उत्पादन से उनको 2,42,000 से 2,50,000 रुपये तक का प्रतिवर्ष लाभ मिलता है। ■

कृषि विविधीकरण

कृषि में विविधीकरण में पारंपरिक रूप से उगाई जाने वाली कम लाभकारी फसलों से अधिक लाभकारी फसलों जैसे-तिलहन, दालें, चारा फसलें, बागवानी, औषधीय और सगंधीय पौधे, फूलों की खेती आदि द्वारा फसल पद्धति में बदलाव करने की आवश्यकता है। इसमें पशुधन, मत्स्य पालन और लघु कृषि आधारित उद्योग भी शामिल हैं। विविधीकरण से रोजगार के अवसर, संसाधनों का इष्टतम उपयोग और लाभप्रदता बढ़ती है। बढ़ती जनसंख्या के साथ दूध, मीट, अंडा आदि की मांग भी बाजार में बढ़ गई है। ये उत्पाद मानव शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं, जो अनाज से प्राप्त नहीं होते हैं। इसके साथ ही साथ मीट प्रोटीन का भी स्रोत है। इन उत्पादों की मांग के कारण डेरी, बकरीपालन, भेड़पालन, शूकरपालन, मछलीपालन इत्यादि भी स्वरोजगार के नए अवसर प्रदान करते हैं। नवयुवक चाहे ग्रामीण हो या शहरी, इनको अपनाकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। किसान मशरूम उत्पादन को भी एक अच्छे उद्यम की तरह स्थापित कर सकते हैं। मशरूम में पाए जाने वाले पोषक तत्वों का महत्व बहुत ज्यादा होने से आजकल लोग इसका प्रयोग अपने आहार में नियमित रूप से कर रहे हैं, जिससे बाजार में इसकी भी मांग काफी बढ़ गई है। इसके उत्पादन के लिए बहुत अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती है। इसके अलावा वर्तमान समय में मधुमक्खी पालन को भी बहुत कम लागत में एक अच्छे उद्यम की तरह स्थापित किया जा सकता है। मधुमक्खियों से मिलने वाले शहद का प्रयोग दवाइयों के निर्माण में किया जाता है। इसके साथ ही साथ शुद्ध शहद की मांग हमेशा रहती है।